मुखपृष्ठ
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यसुधा
वर्ष: 3, अंक 60, मई(प्रथम), 2019

22 अप्रैल - पृथ्वी दिवस विशेष:

बढ़ता प्रदूषण , मरती धरती
खुद बचना है तो बचानी होगी पृथ्वी

डॉ० घनश्याम बादल

22 अप्रैल, पृथ्वी दिवस है । ऐसा दिन, जब सारी दुनिया उस धरती की चिंता करती है जो जीवन का आधार है । और यह सच है कि पृथ्वी के बिना न तो जीवन की कल्पना संभव है और न ही मानव की ।

थल है जीवन आधार :

भले ही पृथ्वी का कुल 66 प्रतिशत भाग आज भी जल से ढका हो और 33 प्रतिशत भाग ही थल हो पर जीवन का करीब 70 से 80 प्रतिशत तक हिस्सा थल पर ही है । जल में यदि जीवन है भी तो भी वहां मानव जीवन की उपस्थिति न के बराबर है केवल जलचर ही जलीय जीवन के अंग हैं ।

संकट की जड़ मानव:

पृथ्वी के निर्माण की अद्भुत घटना से लेकर आज तक पशु , पक्षी और मानव अंतिम आसरा पृथ्वी पर ही देखते हैं । पर, पृथ्वी को नुकसान पहुंचाने वालों में पशु पक्षी नहीं वरन् "माताभूमिः पुत्रोअहंपृथ्वियाः" का उद्घघोष करने वाला मानव सबसे आगे है । अपने व्यक्तिगत स्वार्थों के चलते उसी ने जल , थल व आकाश और पर्यावरण को दूषित करके सबसे ज्यादा हानि पंहुचाई है ।

1970 से जारी है पृथ्वी बचाओ आंदोलन:

दूर दृष्टा विद्वानों ने पृथ्वी को संकट में देखकर 1970 की 22 अप्रैल से पृथ्वी दिवस मनाने की शुरुआत की। सबसे पहले 20 लाख अमेरिकियों ने स्वस्थ पर्यावरण के लक्ष्य को लेकर दुनियाभर में पृथ्वी दिवस मनाना शुरु किया । संयुक्तराष्ट्रसंघ ने भी इसे प्रोत्साहन दिया । अमेरीकी सीनेटर नेल्सन के नेतृत्व में शुरु हुआ यह आंदोलन 1991 आते आते यह 141 देशों में पंहुच चुका था और आज इस दिवस को सारी दुनिया के 194 देश मना रहे हैं ।

पृथ्वीसम्मेलन, पर्यावरण के प्रति चिंता:

1992 में रियो डी जेनेरियो में संयुक्त राष्ट्र पृथ्वीसम्मेलन में पृथ्वी पर संकटों पर गहन विचार ने इस दिन का महत्व और भी बढ़ा दिया तब से लगातार पृथ्वी की रक्षा करने व उसे बचाने के उपायों पर मंथन हो रहा है । 22 अप्रैल 2000 को इंटरनेट ने भी 184 देशों के करीब 500 समूहों को जोड़कर पर्यावरण के प्रति चिंता को स्वर दिया ।प्राकृतिक संतुलन को बचाने की कवायद को रेखांकित करता है पृथ्वी दिवस ।

आज पृथ्वीदिवस ही वह दिन है जब सारी राष्ट्रीय सीमाओं को ताक पर रख सारा संसार पृथ्वी के अस्तित्व की रक्षा पर एक साथ स्वर मिलाता है।

पिघलते ग्लेशियर और ख़तरे:

आज के तेज जीवन में अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु जल , जंगल और ज़मीन के संघर्ष में पृथ्वी को प्रदूषण का भी शिकार होना पड़ा है जिसके चलते भूमंडल का तापमान बढ़ा है जिससे ग्लोबल वार्मिंग जैसी समस्याएं जन्मी है, और ग्लोबल वार्मिंग के चलते आज पृथ्वी के ध्रुवों पर जमे बर्फ व ग्लेशियर्स के पिघलने को खतरा सामने है । एक अनुमान है कि यदि किसी भी वजह से यें ग्लेशियर्स पिघल गए तो पूरी धरती ही जलमग्न हो जाएगी और उस पर करीब 10 मीटर पानी की परत होगी जिसका सीधा सा मतलब यह है कि ऐसा होने पर पृथ्वी से वें सारे जंतु मानव समेत गायब हो जाएंगे जो केवल ज़मीन पर ही जीने की कला जानते हैं । फिर भोजन श्रृंखला प्रभावित होगी और जलीय जंतु भी खत्म हो जाएंगें । साफ सी बात है धरती है तो जीवन है । ज्ञात हो कि इस समय दुनिया में करीब 4 बिलियन लोग हैं और करीब 10 मिलियन रोज पैदा हो रहे हैं सोचिए यदि धरती ही नहीं रही तो क्या होगा ?

एक सर्वे में पाया गया है कि यदि समय रहते बढ़ते पर्यावरण प्रदूषण पर नियंत्रण नही किया गया तो 2035 तक यें ध्रुवीय ग्लेशियर्स पिघल सकते हैं । हालांकि कुछ दूसरे अनुमान इसे झुठलाते भी है पर सोचिए कहीं गलती से भी पहला अनुमान सच हो गया तो क्या होगा ?
आज पृथ्वी दिवस पर कुछ बहुत ही सरल से काम करने पर हम आसानी से पृथ्वी को आने वाले संकटों से बचा सकते हैं ।

कैसे बचेगी पृथ्वी ?

प्रदूषण न फैलाएं:

प्रदूषण फैलने का मतलब है वायुमंडल व जलमंडल का संतुलन बिगड़ना । जहरीली गैसे वैसे ही पृथ्वी का भी दम घोटती हैं जैसे हमारा , उसका तापमान वैसे ही बढ़ता है जैसे हमें बुखार होता है उसका भी स्वस्थ्य गड़बड़ हो जाता हैं और अंतिम परिणाम होता है 'गलोबल वार्मिंग । तो संकल्प लेें कि हम किसी भी हाल में प्रदूषण फैलाने का हिस्सा नहीं बनेंगें ।

पूल वाहन प्रणाली अपनाएं:

हम आने जाने के लिए वाहनों का इस्तेमाल करते हैं । वाहनों के इस अधिकाधिक प्रयोग से वायुमंडल में कार्बनडाइ आॅक्साइड , कार्बन मोनो आॅक्साइड , जैसी गैसों के साथ धुंआ भी निकलता है परिणामतः वायु प्रदूषित हो जाती है और पृथ्वी असुरक्षित । उसका तापमान बढ़ता चला जाता है तो अच्छा हो कि हम पूल वाहन प्रणाली अपनाकर एक ही वाहन का प्रयोग करें इससे बचत भी होगी और प्रदूषण का स्तर भी काबू हो जाएगा ।

जंगल न काटें:

वृक्ष पर्यावरण संतुलन के सबसे बड़े सो्रत हैं , वें जलवायु , मौसम , नमीं , के साथ बाढ़ को भी नियंत्रित करते हैं पर लगातार पेड़ काटने से हमारे लिए ही खतरे की घंटी बज उठी है । अतः यथासंभव वृक्षों के कटान को रोकें, लकड़ी केे विकल्प के रूप में प्लास्टिक , लोहे , फाइबर तथा दूसरे विकल्प तलाशें । कागज़ के उपयोग पर भी ब्रेक लगाना होगा तभी पेड़ और धरती दोनों बच पाएंगें ।

पशु पक्षियों को बचाएं:

पशु पक्षी भी पर्यावरण संतुलन के लिए ज़रुरी हैं पर, उनकी संख्या घटती जा रही है इससे भोजन श्रृंखला में संतुलन बिगड़ा है जिससे प्राकृतिक विनाष को बढावा मिला है पषुओं पक्षियों के अंगों , हड्डियों , रक्त व मांस तथा बालों के उत्पादों को ना कहना सीखना होगा ताकि पृथ्वी के यें संतानें भी सुरक्षित रहें और पृथ्वी भी ।

खनन रोकें:

लगातार खनन से भी धरती की परत क्षतिग्रसत होती है , इससे भू -स्खलन की संभावना बलवती होती है जो खतरनाक है परिणामस्वरुप भूकंप तक आते हैं जिससे धरती प्रभावित होती है । बेहतर हो कि हम अपने लालच को छोड़ें और सरकारें भी इस संदर्भ में ईमानदार हों ।

जागरुकता लाएं :

सबसे प्रभावशाली कदम होगा लोगों में पृथ्वी की सुरक्षा को लेकर एक जागरुकता पैदा करें ,उनमें धरती के प्रति लगाव पैदा किया जाए उन्हे बताया जाए कि यदि धरती ही नहीं रही तो कुछ भी नहीं रहेगा , धरती बीमार होगी तो सब बीमार होगें , धरती पर संकट होगा तो सब पर संकट होगा। तो पृथ्वी को मरने से बचाना है तो उसे बीमार नहीं होने देना है , हो गई है तो उसका इलाज करने को दृढ़ संकल्प करना है ।

आइए, इस पृथ्वी दिवस पर धरती के कल्याण व उसकी सेहत और सुरक्षा की मुहिम आज से ही शुरू करें ताकि यह हरी भरी रह सके ,इस पर समृध्द जीवन बना बचा रह सके और सबसे बड़ी बात कि यह हमारे बाद हमारी आने वाली पीढ़ियों को भी मां की तरह पाल पोस सके

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें